प्रातः क्लास 26/12/68 ओम शान्ति पिता श्री शिवबाबा याद है?

ओम शान्ति। बाप पहले बच्चों को कहते हैं यह भूल तो नहीं जाते हो हम बाप के आगे टीचर के आगे और सुप्रीम गुरू के आगे भी बैठे हुये हैं। बाबा नहीं समझते हैं कि सभी कोई इस याद में बैठते हैं। फिर भी बाप का फर्ज है समझाना। यह है रथ सहित याद करना। हमारा बाबा बेहद का बाप भी है, टीचर भी है और बरोबर हमारा सद्गुरु भी है। जो बच्चों को साथ में भी ले जावेंगे। बाप आये ही हैं बच्चों को श्रृंगार कराने। पवित्रता का भी श्रृंगार कराने आते हैं। धन भी अथाह देते हैं। धन देते ही हैं नई दुनियां के लिये जहां तुम को जाना है। यह बच्चों को याद करना है। बच्चे गफलत करते हैं जो भूल जाते हैं। वह जो पूरी खुशी होनी चाहिए वह कम होती जाती है। ऐसा बाप तो कब मिलता ही नहीं। तुम जानते हो हम बाबा के बच्चे जरूर हैं। वह हमको पढ़ाते भी हैं इसलिये टीचर भी जरूर है। हमारी पढ़ाई है ही नई दुनियां अमरपुरी के लिये। अभी हम संगम युग पर बैठे हैं। यह याद तो जरूर बच्चों को होनी चाहिए। पक्का2 याद करना है। यह भी जानते हो इस समय कंसपुरी आसुरी दुनियां में हैं। समझो कोई को सा0 होता है; परन्तु सा0 से कोई कृष्णपुरी उनकी डिनायस्टी में नहीं जा सकेंगे। कृष्ण की राजधानी में अन्दर ही नहीं जा सकते हैं। जा तब सकेंगे जब बाप, टीचर, गुरू तीनों को याद करते रहेंगे। यह आत्माओं से बात की जाती है। आत्मा ही कहती है हां बाबा। बाबा आप तो सच्च कहते हो। बाप भी हो, आप पढ़ाने वाले टीचर भी हो। सुप्रीम आत्मा पढ़ाती है। लौकिक पढ़ाई भी आत्मा ही शरीर साथ पढ़ती है; परन्तु वह आत्मा भी पतित तो शरीर भी पतित है। दुनियां के मनुष्यों को यह पता नहीं हैं कि हम नर्कवासी हैं। नर्क, विषय वैतरणी नदी गटर में पड़े हैं। अभी तुम समझते हो हम तो अभी चले अपनी वतन। यह तुम्हारा वतन नहीं है। यह है रावण का पराया वतन। तुम्हारे वतन में तो अथाह सुख है। कांग्रेस लोग ऐसे नहीं समझते हम पराये राज्य में हैं। आगे मुसलमानों के राज्य में बैठे थे। फिर क्रिश्चयन के राज्य में बैठे। अभी तुम जानते हो हम अपने राज्य में जाते हैं। आगे रावण राज्य को हम अपना राज्य समझ बैठे थे। यह भूल गये हैं पहले हम राम राज्य में थे। फिर 84 के चक्र में आने से रावण राज्य में दुःख में आकर पड़े हैं। पुराने राज्य में तो दुःख ही दुःख है। यह सारा ज्ञान अन्दर में आना चाहिए। बाप तो जरूर याद आवेगा; परन्तु तीनों को याद करना है। यह नालेज भी मनुष्य ही ले सकते हैं। जानवर तो नहीं पढ़ेंगे। यह भी तुम बच्चे समझते हो वहां कोई कैरेक्टर्स आदि की पढ़ाई नहीं होती। बाप यहां ही तुमको माला माल कर देते हैं। सभी तो राजाएं नहीं बनते। व्यापार भी चलता होगा; परन्तु वहां तुमको अथाह धन रहता है। घाटा आदि होने का कायदा ही नहीं। लूट मार आदि वहां होती ही नहीं। नाम ही है स्वर्ग। अभी तुम बच्चों को स्मृति आई है हम स्वर्ग में थे। फिर पुनर्जन्म लेते नीचे उतरते हैं। बाप कहानी भी इन्हों की ही करके बताते हैं। 84 जन्म नहीं लिये होंगे तो माया हरा देगी। यह भी बाप समझाते रहते हैं। माया का कितना बड़ा तूफान है। बहुतों को माया हराने की कोशिश करती है। आगे चल तुम बहुत देखेंगे। सुनेंगे। बाबा के पास सभी के चित्र होते तो तो तुमको वन्डर दिखाते। यह फलाना इतना दिन आया बाप का बना फिर माया खा गई। मर गये। माया के हाथ जाकर मिले। यहां इस समय तुम शरीर छोड़ेंगे तो बाबा के साथ वे हद के घर में रहेंगे। वहां बाबा मम्मा बच्चे सभी हैं ना। परिवार ऐसा ही होता है। वहां बाप और भाई2 हैं और कोई सम्बन्ध नहीं हैं। यहां बाप और भाई बहन हैं। फिर वृद्धि होती है तो चाचा, काका, मामा बहुत सम्बन्ध हो जाते हैं। इस संगम युग पर तुम प्रजापिता ब्रह्मा के बनते हो तो भाई बहन हो। शिवबाबा को याद करते हो तो भाई2 हो। बहुत बच्चे भूल जाते हैं। बाप तो समझाते रहते हैं। बाप का फर्ज है बच्चों को सिर पर उठाना। तब तो नमस्ते2 करते रहते हैं। अर्थ भी समझाते हैं। भक्ति करने वाले साधु सन्त आदि कोई भी तुमको जीवन .....। मुक्ति के लिये ही पुरूषार्थ करते हैं। वह है ही निवृत्ति मार्ग वाले। वह राजयोग कैसे सिखावेंगे। राजयोग है ही प्रवृत्ति मार्ग का। प्रजापिता ब्रह्मा को 4 भुजाएं देते हैं तो प्रवृत्ति मार्ग हुआ ना। यहां बाप ने इन्हों को एडॉप्ट

किया है तो नाम रखा है ब्रह्मा और सरस्वती। शास्त्रों में दिखाते हैं ब्रह्मा–सरस्वती के पीछे फिदा हुआ। शंकर पार्वती के पीछे फिदा हुआ, नारायण लक्ष्मी के पिछाड़ी फिदा हुआ, राधे और कृष्ण तो भाई बहन थे। फिर स्त्री पुरूष बने। तो समझते हो फिदा हुये। कितनी ग्लानि लिख दी है। ब्रह्मा तो बाप ठहरा। बाप बच्चों पर कैसे फिदा होगा। सो भी बूढ़ा बाप। ड्रामा में नूंध देखो कैसी है। वानप्रस्थ अवस्था में ही मनुष्य गुरू करते हैं। 60 वर्ष के बाद। इसमें भी 60 वर्ष के बाद बाप ने प्रवेश किया तो बाप, टीचर, गुरू बन गये। अभी तो कायदे भी बिगड़ गये हैं। छोटे बच्चे को भी गुरू करा देते हैं। कहते हैं नहीं तो बहुत बुरी हालत में मरेंगे। गुरू लोग फंसाते बहुत हैं। यह तो है ही निराकार। तुम्हारी आत्मा यह बाप भी करते हैं, टीचर भी बनते हैं, सद्गुरु भी बनते हैं। निराकारी दुनियां को कहा जाता है आत्माओं की दुनियां। ऐसे तो नहीं कहेंगे दुनियां ही नहीं है। शान्तिधाम कहा जाता है वहां आत्माएं रहती हैं। अगर कहे परमात्मा का नाम–रूप, देश–काल नहीं, तो आत्मा का फिर नाम रूप कहां से आवेगा। कितने बेसमझ बन गये हैं। एकदम जंगल में रहने वाले बन्दर हैं। इसलिये इनको कांटों का जंगल कहा जाता है। यह भी कोई की बुद्धि नहीं चलती बाप नाम रूप से न्यारा है तो बच्चे फिर कहां से आवेंगे। तुम बच्चे अभी समझते हो यह वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी कैसे रिपीट होती है। सारी वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी कैसे रिपीट होती है। कोई नहीं जानते। देवी देवताएं क्षत्रिय की हिस्ट्री जागराफी कोई है नहीं। कहां तक यह राज्य करते हैं फिर उन्हों के बच्चे कैसे तख्त पर बैठते हैं। उनको कहा जाता है हिस्ट्री जागराफी। हिस्ट्री चैतन्य की होती है जागराफी तो जड़ वस्तु है। तुम्हारी आत्मा जानती है हम कहां तक राज्य करते हैं। हिस्ट्री गाई जाती है। जिसको कहानी कहा जाता है। जागराफी रिहासित को कहा जाता है। चैतन्य ने राज्य किया जड़ तो राज्य नहीं करेंगे। कितने समय से फलाने का राज्य था। क्रिश्चयन ने भारत पर कब से कब तक राज्य राज्य किया। तो इस वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी को कोई जानते ही नहीं। कहते हैं सतयुग को तो लाखों वर्ष हुआ। उसमें कौन राज्य कर के गये कितना समय राज्य किया यह कोई भी नहीं जानता। इनको कहा जाता है हिस्ट्री और जागराफी। हिस्ट्री चैतन्य की होती है, जागराफी जड़ की होती है। जड़ और चैतन्य का ही यह सारा खेल है। आत्मा चैतन्य है, सत्य है, आनन्द स्वरूप है। प्रकृति तो जड़ है। जड़ और चैतन्य का मिलकर शरीर बनता है। जड़ शरीर में आत्मा प्रवेश करती है तो उनको जीवात्मा कहा जाता है। आत्मा तो सदैव चैतन्य है। आत्मा जड़ शरीर में बैठ उनको चैतन्य बना देती है। तो इसको कहा जाता है जीवात्मा। इस शरीर को चलाने वाली आत्मा है। सारा खेल ही जड़ और चैतन्य का है। मनुष्य जीवन ही उत्तम गाया जाता है। आदशुमारी भी मनुष्यों की गिनी जाती है। जानवरों की तो कोई भी गिनती कर न सके। सारा खेल तुम्हारे पर है। हिस्ट्री जागराफी भी तुम सुनते हो। बाप इसमें आकर तुमको सभी बातें समझाते हैं। इसको कहा जाता है बेहद की हिस्ट्री जागराफी। यह नालेज न होने कारण तुम कितने बेसमझ तमोप्रधान बन जाते हो। मनुष्य होकर और दुनियां के हिस्ट्री जागराफी को न जाने तो वह मनुष्य ही क्या काम का। अभी बाबा द्वारा तुम वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी सुन रहे हो। यह पढ़ाई कितनी अच्छी है। कौन पढ़ाते हैं। बाप। बाप ही ऊंच ते ऊंच पद दिलाने वाला है। इन ल0ना0 का ऊंच ते ऊंच पद है ना और उनकी जो इन्हों के साथ स्वर्ग में रहते हैं। वहां बैरीस्टरी आदि तो करते ही नहीं वहां तो सिर्फ़ हुनर सीखना होता है। हुनर न सीखे तो मकान आदि कैसे बनावे। एक दो को हुनर सिखलाते हैं। उनको दर्जा नहीं कहा जाता सिखलाने का हुनर होता है। वह हुनर की सिखाई अलग होती है। वहां दर्जे आदि की बात ही नहीं। बाकी हुनर तो जरूर चाहिए ना। नहीं तो इतने मकान आदि कौन बनावे? आपे ही तो नहीं बन जावेंगे। यह सभी अभी तुम बच्चों की बुद्धि में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार रहती है। तुम जानते हो यह चक्र फिरता रहता है। इतना समय हम राज्य करते थे। फिर रावण के राज्य में आते हैं। दुनियां को इन बातों का पता थोड़े ही है कि हम रावण राज्य में हैं। कहते हैं हमको बाबा रावण के राज्य से

लिबरेट करो। कांग्रेस राज्य ने क्रिश्चन राज्य से अपन को लिबरेट किया। अभी फिर कहते हैं गाड फादर हमको लिबरेट करो। स्मृति आती है ना। कोई भी यह नहीं जानते कि ऐसे क्यों कहते हैं। अभी तुमने समझा है सारी सृष्टि पर ही रावण राज्य है। सभी कहते हैं राम राज्य चाहिए। तो लिबरेट कौन करेगा। यह किसको भी पता नहीं है। समझते हैं गाड फादर लिबरेट कर गाइड बन ले जावेंगे। भारतवासियों को इतना भी अकल नहीं है। यह तो बिल्कुल ही तमोप्रधान हैं। वह न इतना सुख, न इतना दुःख उठाते हैं। भारतवासी सभी से सुखी बनते हैं। तो सभी से दुःखी भी बने हैं। हिसाब है ना। अभी कितना दुःख है। रिलीजियस माइन्टेड ही याद करते हैं। ओ गाड फादर, लिबरेटर। तुम्हारी भी दिल में है बाबा आकर हमारी दुःख करो और सुखधाम ले चलो। वह कहते हैं शान्तिधाम ले चलो। तुम कहेंगे सुखधाम ले चलो। अभी बाप आया हुआ है तो बहुत खुशी होनी चाहिए। वह है शंकराचार्य। और यह है शिवाचार्य। शंकराचार्य शास्त्र सुनावेंगे, वह है पुजारी और यह है पूज्य बनाने वाला। उनको सद्गुरु कहा जाता है। सभी वेदों शास्त्रों आदि को जानते हैं। अब बाप कहते हैं यह जो शास्त्रों का भूसा बुद्धि में भरा हुआ है उनको निकालो। मैं जो सुनाऊँ वह सुनो। इन भक्तिमार्ग के गुरूओं आदि सभी को छोड़ो। इन्होंने ने तुमको नीचे गिराया है। हम तुमको पार करते हैं। इन वेदों शास्त्रों आदि की बातें न सुनो। वह लोग इन्हों को कितना मान देते हैं। मैं कहता हूं यह भूसा है भक्ति मार्ग में कनरस कितना है। इन में रीयल बात कुछ भी नहीं हैं। एकदम आटे में लून है। बाकी तो सभी हैं गपोड़े। कृष्ण राम सभी को ठोक देते हैं। चण्डीका देवी का भी मेला लगता है अभी चण्डीका का फिर मेला क्यों लगता है। चण्डी किसको कहा जाता है। बाबा ने बताया है चण्डाल का जन्म भी ऐसी ब्रह्माकुमारियां ही लेती हैं। यहां रह खा पी कर, कुछ देकर फिर कहते हैं हमने जो दिया वह हमको दो। हम नहीं मानते। संशय पड़ जाता है ना। तो वह क्या जाकर बनेंगे। ऐसे चण्डीका का भी मेला लगता है। फिर सतयुगी तो बनते हैं ना। कुछ भी समय मददगार बने तो स्वर्ग में गये। थोड़ी अंगुली भी दी ना। फिर माया ने डंस लिया माया की लड़ाई है ही तुम्हारे साथ। तुम युद्ध के मैदान में हो। यह वह थोड़े ही जानते हैं। ज्ञान तो कोई के पास है नहीं। वह चित्रों वाली गीता है कितना पैसा कमाते हैं। आजकल चित्रों पर तो सभी आशुक होते हैं। इसको आर्ट समझते हैं। मनुष्यों को क्या पता देवताओं के चित्र कैसे होते हैं। देवताओं के चित्र तो यह है ना। इनकी तुम वंशावली देवी देवता हो। सिर्फ़ पतित बनने कारण धर्म भ्रष्ट कर्मभ्रष्ट बन गये हैं। तुम असल में कितने फर्स्ट क्लास थे। फिर क्या बन गये हो। इतना अंधा काला होता ही नहीं। देवताओं की नेचरल शोभा होती हैं। सतोप्रधान तत्वों से बना हुआ शरीर होता है ना। वहां तो नेचरल ब्यूटी होती है। तो यह बाप यह सभी समझाकर फिर भी कहते हैं बच्चे बाप को याद करो। बाप बाप भी है, टीचर भी है, सद्गुरु भी है। तीनों रूपों में याद करो। तो तीनों वरसे मिलेंगे। पिछाड़ी वाले तीनों रूपों में याद नहीं कर सकेंगे। फिर मुक्ति में चले जावेंगे। बाबा ने समझाया है सूक्ष्मवतन, यह तो है सा0 की बातें। बाकी हिस्ट्री जागराफी सारी यहां की है। इनकी आयु का किसको भी पता नहीं है। अभी तुम बच्चों को बाप ने समझाया है कोई भी समझा सकते हो। पहले2 तो बाप का परिचय देना है। वह बेहद का बाप है सुप्रीम। लौकिक बाप को कब परम वा सुप्रीम आत्मा नहीं कहा जाता। सुप्रीम तो एक ही है। जिसको भगवान कहा जाता है। वह नालेजफुल है तो तुमको नालेज सिखलाते हैं। यह ईश्वरीय नालेज है सोर्स ऑफ इनकम। नालेज भी उत्तम मध्यम कनिष्ट होते हैं। बाप है ऊंच ते ऊंच। पढ़ाई भी ऊंच ते ऊंच है। मर्तबा भी ऊंच ते ऊंच है। हिस्ट्री जागराफी तो झट जान जाते हो। बाकी याद की यात्रा में युद्ध चलती है। इसमें ही तुम हारते हो। हारकर भागन्ती हो जाते हो। तो नालेज भी भागन्ती हो जाती है। फिर जैसे थे वैसे ही बन जाते हैं। बाप के आगे चलन से, देहअभिमान से झट प्रसिद्ध हो जाता है। ब्राह्मणों की माला भी है; परन्तु कईयों को पता नहीं है कि हम कैसे नम्बरवार यहां बैठें। देह अभिमान है ना। अच्छा, बच्चों को गुडमॉर्निंग और नमस्ते।